बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - २ - पूर्व कसौटी - १९ जून, २०१६)

☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English)में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

६०२/२४०

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १९ जून, २०१६)

(समय : दोपहर २:०० से ५:००) **सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र -२**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : १००**

विभाग-१ : किशोर सत्संग प्रवीण - प्रथम संस्करण, अप्रैल - २००३

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''अत: कृपया आप बीच में न आईए ।'' (१९) २. ''हमने आज्ञा लोपकर दोनों खोया ।'' (७१)

३. ''एकांत में भी स्त्री का योग होने पर भी भ्रष्ट नहीं हुए ।'' (८१)

प्र.२ निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन के बारे में कारण लिखिए । (बारह पंक्ति में) [९]

१. इसी जन्म में उत्तम भक्त हो सकते हैं । (४७-४८) २. श्रीजीमहाराज ने पार्षद को मूलजी और कृष्णजी को बुलाने को कहा । (९६)

३. श्रीजीमहाराज ने कल्याणदास को दीक्षा देकर अद्‌भुतानंद बनाये । (१३)

४. महिमा सहित की जानेवाली भक्ति ही निर्विघ्न भक्ति है । (९७-९८)

प्र.३ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर टिप्पणी लिखिए । (बारह पंक्तियों में) [८]

१. राजा के विशेष धर्म (४) **अथवा** २. संप्रदाय के शास्त्र : भक्तचिंतामणि (४०-४१)

३. लोया में शाकोत्सव (७९-८०) **अथवा** ४. साधु (१४-१५)

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [६]

१. फगुआ की प्रार्थना किस ग्रंथ में कौन-से प्रकरण में समाविष्ट की है ? (८१-८२)

२. डोसाभाई को क्यों संसार बांध नहीं सकता ? (९०)

३. भारत के तीर्थस्थान किसके प्रतिनिधि हैं ? (२४)

४. मुक्तानंद स्वामी ने प्रथम श्रेष्ठ हरिभक्त में किस का नाम दिया ? (२०)

५. समाधि किसे कहते हैं ? (४३)

६. मगनभाई को क्या सुनकर जिज्ञासा बढ़ती गई ? (१०२)

प्र.५ वचनामृत : गढडा प्रथम प्रकरण : ५४ (६१-६२) **का निरूपण कीजिए ।** [५]

प्र.६ निम्नलिखित विषय के लिए सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । (६)

विषय : उका खाचर (१०-११)

१. जिसे उका खाचर की तरह सेवा का व्यसन हो, उसकी वासना का तत्काल नाश होता है । ग. प्र. २५ **२.** जिसे उका खाचर की तरह सेवा का व्यसन हो, उसकी वासना का तत्काल नाश होता है । ग. म. २५ **३.** श्रीजीमहाराज जो कार्य उसे दे वो सिद्ध करके ही दम लेते । **४.** श्रीजीमहाराज उलाहना देंगे एसी सभी की सोच के बीच एक हरिभक्त ने कारण बताया । **५.** उका खाचर तो महाराज के सेवक थे, अत: मौन रहे । **६.** सभा में देर से आने पर श्रीजीमहाराज ने प्रश्न किया । **७.** हमारे स्वभाव को तो निरंतर साथ रहनेवाले उका खाचर तथा सोमला खाचर आदि हरिजन ही यथार्थ रूप से जानते हैं । **८.** उका खाचर की सदा एक-सी स्थिति रहती । ग. अं. २४ **९.** कुत्ते द्वारा बिगाड़े गये चबूतरे पर दृष्टि पड़ी तो तुरत चबूतरे को धो डाला, पुन: घेला में स्नान किया । **१०.** महाराज ने गले से लगा लिया और उनकी छाती में चरणारविंद की छाप दी । **११.** जिसे उका खाचर की तरह संत की महिमा समझ में आई है, वही ऐसी सेवा कर सकता हैं । **१२.** जिसे उका खाचर की तरह हमारी महिमा समझ में आई है, वही ऐसी सेवा कर सकता हैं ।

(१) केवल सही क्रमांक ☐☐☐☐☐☐

(२) यथार्थ घटनाक्रम ☐☐☐☐☐☐

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । (२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

प्र.७ निम्नलिखित कीर्तन / जनमंगलस्तोत्रम् / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । [८]

१. जनमंगलस्तोत्रम् : ॐ श्री प्रभवे नम: ..... ॐ श्री हरये नम: (४९) २. जयसि नारायण ..... सुखद स्वामी । (९)

३. शिक्षार्थमत्र ..... शरणं प्रपद्ये ॥ (२६) ४. बाह्यान्त ..... शरणं प्रपद्ये ॥ (२६) - श्लोक का हिन्दी में अनुवाद लिखिए ।

विभाग-२ : गुणातीतानंद स्वामी -प्रथम संस्करण, नवम्बर - २००२

प्र.८ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''निर्गुण ब्रह्म सुलभ अति, सगुण न जाने कोई ।'' (४३-४४) २. ''मेरा पाँव निकालिए वरना वह टूट जाएगा ।'' (३२)

३. ''इस स्तंभ में प्रवेश करके मुझे जवाब दीजिए ।'' (३६)

प्र.९ निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन के बारे में कारण लिखिए । (नौ पंक्ति में) [९]

१. साकरबा को मूलजी के वचन की सत्यता समझ में आ गई । (३) २. वाघाखाचर को सुषुप्ति अवस्था मिट गई । (८१)

३. वरताल में शुकमुनि ने गुणातीतानंद स्वामी को अक्षर कहने की मना की । (८२) ४. बहाउद्दीन रंक से राजा बन गया । (६८)

प्र.१० निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषय पर प्रमाणसर टिप्पणी लिखिए । (बारह पंक्तियों में) [८]

१. प्रागजी भक्त (७९-८०) २. मूलजी और श्रीहरि का प्रथम मिलाप (७-९) ३. जूनागढ़ के मंदिर के महंतपद पर (४४-४५)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर **''सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - २''** परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहीं होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **[५]**

१. स्वामी पालकी में न बैठते हुए किसमें बैठे ? (६२)
२. महाराज ने परमहंसों को क्यों आपस आपस में जमानत देने को कहा ? (४४)
३. मावजी मिस्त्री को स्वामी ने क्या लाने को कहा ? (७१)
४. पार्षदों ने स्वामी का नाम दिया तो पटेल लोग ने क्या किया ? (७६)
५. आत्मानंद स्वामी के आशीर्वाद से वल्लभजी जानी के घर किस का जन्म हुआ ? (१)

प्र.१२ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग को संक्षिप्त में बयानकर भावार्थ लिखिए । (बारह पंक्तियों में) **[४]**

१. सेवा करे वही महंत (७४-७५) २. मेरे वचन तो एक जोगी ही बदल सकते हैं । (५२)

प्र.१३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[८]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. बाजारु काँटे (६६)

(१) ☐ बबुल का काँटा पैर में (२) ☐ रूप का काँटा आँख में
(३) ☐ स्पर्श का काँटा त्वचा में (४) ☐ स्वाद का काँटा जीभ में

२. जीव का ऊलटा स्वभाव (७२)

(१) ☐ सेवा करने की मना की (२) ☐ स्वामी में मनुष्यभाव देखा
(३) ☐ समाज में मैं मुँह क्या दिखाऊँगा ? (४) ☐ वस्ता ने नश्वर शरीर छोड़ दिया

३. वासुदेवचरणदास को शांति हुई, कयोंकि.... (६३)

(१) ☐ गन्ने के टुकडे खाए । (२) ☐ दादा खाचर के खपरैल का ध्यान किया ।
(३) ☐ चंपा के पुष्प की सुगंधी ली । (४) ☐ गार करने की सेवा की ।

४. स्वामी जूनागढ़ में रहे (८६)

(१) ☐ चार वर्ष (२) ☐ पाँच मास (३) ☐ पाँच दिन (४) ☐ चालीस वर्ष

प्र. १४ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[६]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : बालचरित्र : समयान्तर से कैलासनाथ और पूरीबा को दूसरे पुत्र की प्राप्ति हुई । उसका नाम रखा रवजी ।

जवाब : बालचरित्र : समयान्तर से भोलानाथ और साकरबा को दूसरे पुत्र की प्राप्ति हुई । उसका नाम रखा सुन्दरजी ।

१. **प्रौढ़ प्रताप :** गढ़डा में फूलदोलोत्सव करके स्वामी बाबरियावाड़ प्रदेश में भ्रमण करने निकले और गाँव लीलखा पधारे । आसपास के श्रेष्ठीओं का बड़ा संघ उनके साथ था । (६१)

२. **देह का अनादर :** ऐसी शारीरिक प्रतिकूलता होते हुए भी ब्रह्मानंद स्वामी के मंडल में स्वामी सोरठ प्रदेश में, पंचाला गाँव की ओर भ्रमण करने लगे। यहाँ तो भोजन में घी के साथ खोपरा भी लेते थे । (२६)

३. **बालचरित्र :** महा शुक्ला पड़वा का दिन था । अचानक कानजी ने अपनी माँ से कहा 'माँ ! माँ ! आज तो मेरे प्रभु पुरुषोत्तमनारायण को छपिया में यज्ञोपवीत संस्कार दिया जा रहा है ।' (३)

४. **विरक्ति :** आचार्य का आदेश होते ही स्वामी दयानंद स्वामी की सेवा में रुक गए । महाराज वरताल पधारे। स्वामी ने अत्यंत महिमा और प्रेम से दयानंद स्वामी की सेवा की । (३४)

५. **आज्ञा धारक :** गुणातीतानंद स्वामी की इच्छा देखकर गोपालानंद स्वामी सौराष्ट्र की ओर जाने के लिए तुरंत तैयार हुए। उनके साथ एक विरक्तानंद गुदडिया पार्षद खुशीसे जाने को तैयार हुए । (२५)

६. **श्रेष्ठवक्ता :** एकबार महाराज ने अद्‌भूतानंद स्वामी, व्यापकानंद स्वामी, सुखानंद स्वामी, नृसिंहानंद स्वामी, गुणातीतानंद स्वामी आदि उन्नीस सद्‌गुरुओं को दरबारगढ़ में भोजन का निमंत्रण दिया । (२८)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १० जुलाई, २०१६ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx